।। वीतराग शासन जयवंत हो ।।

'विशद'
रक्षा बन्धन विधान

माण्डला

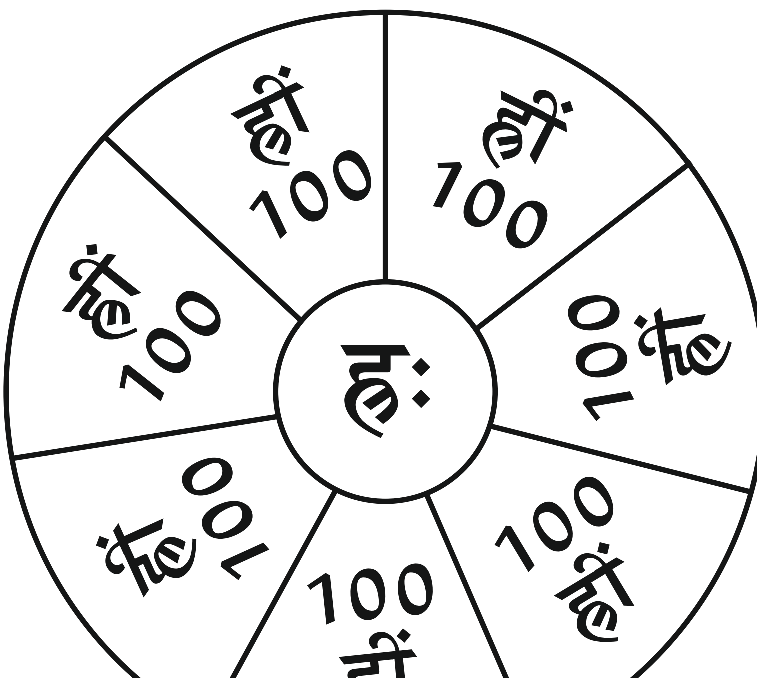

रचयिता :

प. पू. क्षमामूर्ति 108

आचार्य श्री विशदसागर जी

कृति : **रक्षा बन्धन विधान**
कृतिकार : प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण : द्वितीय, 2026
प्रतियाँ : 1000
संकलन : स्थविर मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोग : मुनिश्री विभोरसागरजी, मुनिश्री विलक्ष्यसागरजी,
मुनिश्री विपिनसागरजी
सहयोगी : आर्यिका श्री 108 भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री 105 वात्सल्यभारती माताजी
संपादन : ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425
ब्र. प्रदीप भैया - मो.: 7568840873
कम्पोजिंग : ब्र. आरती दीदी - मो.: 8700876822
प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017
2. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी, मो.: 9416888879
3. नीरज जैन, लखनऊ, मो.: 9451251308
4. जय अरिहंत ट्रेडर्स, दिल्ली, मो.: 9818115971
5. राजेश जैन, खाकरोट वाले, इन्दौर, मो.: 9425316970

पुण्यार्जक :

श्रीमान विनय जी, वर्षा जी, नवीन जी, सुविधा जी
नीलम जी, महेन्द्र जी, अभिनव जी, आशीष जी
अभिषेक जी सेठी परिवार, मालपुरा वाले
इमलीवाला फाटक, जयपुर (राज.)

कृति : **रक्षा बन्धन विधान**
कृतिकार : प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण : द्वितीय, 2026
प्रतियाँ : 1000
संकलन : स्थविर मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोग : मुनिश्री विभोरसागरजी, मुनिश्री विलक्ष्यसागरजी,
मुनिश्री विपिनसागरजी
सहयोगी : आर्यिका श्री 108 भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री 105 वात्सल्यभारती माताजी
संपादन : ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425
ब्र. प्रदीप भैया - मो.: 7568840873
कम्पोजिंग : ब्र. आरती दीदी - मो.: 8700876822
प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017
2. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी, मो.: 9416888879
3. नीरज जैन, लखनऊ, मो.: 9451251308
4. जय अरिहंत ट्रेडर्स, दिल्ली, मो.: 9818115971
5. राजेश जैन, खाकरोट वाले, इन्दौर, मो.: 9425316970

पुण्यार्जक :

विजय कुमार संगीता देवी छाबड़ा
(विजय नगर वाले)
पाण्डु (गौहाटी), आसाम
मो.: 9864049571

लघु विनय पाठ

दोहा

पूजा विधि से पूर्व यह ,पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव जी, कर्म नशाए आठ।।1।।
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनंत चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान।।2।।
पीड़ाहारी लोक में ,भव-दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के,शिव पद के दातार।।3।।
धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4।।
भविजन को भव सिंधु में, एक आप आधार।
कर्म बंध का जीव के, करने वाले क्षार।।5।।
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।।6।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग।।7।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो!, आया तुमरे द्वार।।8।।

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना ,से हो भव का अंत।।9।।
मंगल जिनगृह बिंब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।10।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पूजन प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षेपण करना)

चत्तारि मंगलं,अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि-पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि। ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाऽशुद्ध अवस्था में कोई ,णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाये।।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए ।।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले ,पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण पंच कल्याणेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तर सहस्र नामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग,करणानुयोग,चरणानुयोग,द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि तत्त्वार्थसूत्र दशाध्याय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

अनेकांत स्याद्वाद के धारी ,अनंत चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन , का करने वाले कल्याण।।
तीनलोक के ज्ञाता दृष्टा ,जग मंगल कारी भगवान।
भावशुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ प्रभु का गुणगान।।1।।
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक ,श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!।
हे अर्हंत! अष्ट द्रव्यों का ,पाया मैंने आलंबन।
होकर के एकाग्र चित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।2।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ–प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत्।

स्वस्ति मंगल पाठ

वृषभ अजित संभव अभिनन्दन,सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शान्ती जिन,कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके ,हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान्।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निष्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व–पर कल्याण।।1।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौ भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान्।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मनबल वचन कायबल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।
भेद आठ औषधि ऋद्धी के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।।3।।

(इति परम–ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्)(इति पुष्पांजलि क्षिपेत्)

मूलनायक सहित समुच्चय पूजा (लघु)

स्थापना दोहा

देव शास्त्र गुरु देव नव, विद्यमान जिन सिद्ध।
कृत्रिमाकृत्रिम बिंब जिन, भू निर्वाण प्रसिद्ध।।
सहस्रनाम दशधर्म शुभ, रत्नत्रय णमोकार।
सोलहकारण का हृदय, आह्वानन् शत् बार।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री..........सहित वर्तमान,भूत,भविष्यत,संबंधी पंच भरत, पंच ऐरावत, पंच विदेह विराजित सर्व तीर्थंकर,सर्व देव,शास्त्र,गुरु,नवदेवता,तीस चौबीसी,पंचमेरु, नंदीश्वर,त्रिलोक संबंधी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहस्रनाम, सोलहकारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार,तीर्थ क्षेत्र,अतिशय क्षेत्र, ढाई द्वीप स्थित तीन कम नौ करोड गणधरादि मुनि, निर्वाण क्षेत्रादि समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

सखी छंद

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रुज विनशाएँ
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री .... सहित सर्व पूज्येषु श्री जिनेन्द्राय नमः जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

सुरभित यह गंध चढ़ाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री .... सहित सर्व पूज्येषु श्री जिनेन्द्राय नमः संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत के पुंज चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री .... सहित सर्व पूज्येषु श्री जिनेन्द्राय नमः अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्पित हम पुष्प चढ़ाएँ, कामादिक दोष नशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री .... सहित सर्व पूज्येषु श्री जिनेन्द्राय नमः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

चरु यह रसदार चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री .... सहित सर्व पूज्येषु श्री जिनेन्द्राय नमः क्षुधारोग विनाशनय नैत्रेद्यं निर्व. स्वाहा।

रत्नों मय दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री .... सहित सर्व पूज्येषु श्री जिनेन्द्राय नमः महामोहान्धकार विनाश्यानाय दीपं निर्व. स्वाहा।

सुरभित यह धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री .... सहित सर्व पूज्येषु श्री जिनेन्द्राय नमः अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल ताजे शिव फलदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री .... सहित सर्व पूज्येषु श्री जिनेन्द्राय नमः मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, अनुपम अनर्घ्य पद पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री .... सहित सर्व पूज्येषु श्री जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा–शांती पाने के लिए, देते शांती धार।
हमको भी निज सिम करो, कर दो यह उपकार।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– पुष्पांजलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।
विशद भावना है यही, कर्म होंय निर्मूल।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

पंचकल्याणक का समुच्चय अर्घ्य

दोहा - गर्भ जन्म तप ज्ञान शुभ, पाएँ मोक्ष कल्याण।
अर्चा करते हम यहाँ, पाएँ पद निर्वाण ॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक प्राप्त सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **जैनधर्म जयवंत है, तीनों लोक त्रिकाल।**
गाते जैनाराध्य की, भाव सहित जयमाल।।

ज्ञानोदय छंद

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैन धर्म जिन चैत्य जिनालय, जैनागम का है अर्चन।।1।।
भरतैरावत ढाई द्वीप में, तीन काल के जिन तीर्थेश।
पंच विदेहों के तीर्थंकर, पूज रहे हम यहाँ विशेष।।2।।
स्वर्ग लोक में और ज्योतिषी, देवों के जो रहे विमान।
भावन व्यंतर के गेहों में, रहे जिनालय महति महान्।।3।।
मध्यलोक में मेरु कुलाचल, गिरि विजयार्ध हैं इष्वाकार।
रजताचल मानुषोत्तर गिरि पे, नंदीश्वर हैं मंगलकार।।4।।
रुचक सुकुंडल गिरि पे जिनगृह, सिद्ध क्षेत्र जो हैं निर्वाण।
सहस्रकूट शुभ समवशरण जिन, मानस्तंभ हैं पूज्य महान्।।5।।
उत्तम क्षमा मार्दव आदिक, बतलाए दश धर्म विशेष।
रत्नत्रय युत धर्म ऋद्धियाँ, सहसनाम पावें तीर्थेश।।6।।

दोहा

सोलह कारण भावना, और अठाई पर्व।
पंच कल्याणक आदि हम, पूज रहे हैं सर्व।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री..........सहित वर्तमान,भूत,भविष्यत,संबंधी पंच भरत, पंच ऐरावत,पंच विदेह स्थित सर्व जिनेश्वर,सर्व देव,शास्त्र,गुरु,नवदेवता,तीस चौबीसी,पंचमेरु, नंदीश्वर,त्रिलोक संबंधी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहस्रनाम, सोलहकारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार,तीर्थक्षेत्र,अतिशय क्षेत्र, ढाईद्वीप स्थित तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनीश्वरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा

जिनाराध्य को पूजकर, पाना शिव सोपान।
यही भावना है विशद, पाएँ पद निर्वाण।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

स्तवन

दोहा– श्री अकम्पनाचार्य जी, मुनिवर विष्णु कुमार।
के निमित्त वात्सल्य का, चला श्रेष्ठ त्योहार।।

(ज्ञानोदय छन्द)

देव शास्त्र गुरु पूज्य लोक में, जैनागम जिन धर्म महान।
जिन चैत्यालय चैत्य हमारे, जिनका हम करते गुणगान।।
भरतैरावत में त्रैकालिक, तीर्थंकर हैं गुण की खान।
शाश्वत रहें विदेह क्षेत्र में, प्राप्त करें सब पद निर्वाण।।1।।

लोकालोक के मध्य में भाई, जम्बूद्वीप है मंगलकार।
जम्बू वृक्ष के कारण जिसका, नाम पड़ा है अतिशयकार।।
जिसके भरत क्षेत्र में पावन, आर्य खण्ड में भारत देश।
नगर हस्तिनापुर है जिसमें, जिसकी महिमा रही विशेष।।2।।

सप्त शतक मुनि संघ में लेकर, श्री अकम्पनाचार्य मुनीश।
पद विहार करके आए थे, जिनके चरण झुकाएँ शीश।।
पूर्व कर्म का फल यह मानें, जिन पर हुआ घोर उपसर्ग।
सहन किए सब समता धारी, पाने चले सन्त अपवर्ग।।3।।

पद्मराय राजा के आगे, बलि आदिक मंत्री थे चार।
माँगे जो वरदान कपट से, किया पूर्व में था उपकार।।
पद्मराय ने निश्चल होके, दिया मंत्रियों को वरदान।
राज्य चलाओ सात दिनों तक, किया राज्य में यह ऐलान।।4।।

चारों ओर से अग्नि जलाकर, किये वहाँ पर कुत्सित यज्ञ।
सहन किए उपसर्ग सर्व मुनि, ध्यान लगाए जो आत्मज्ञ।।
क्षुल्लक जी ने हाल सुनाया, विष्णु कुमार मुनी के पास।
ब्राह्मण भेष धारकर मुनिवर, किए पूर्ण उपसर्ग विनाश।।5।।

श्री अकम्पनाचार्य आदि फिर, करने को निकले आहार।
रक्षा बन्धन पर्व तभी से, लोग मनाए शुभ त्योहार।।
वात्सल्य का पर्व मनाते, प्राणी होके भाव विभोर।
भव्य जीव सब हर्ष मनाए, खुशियाँ छाई चारों ओर।।6।।

(इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री श्रेयांसनाथ पूजन

स्थापना

सोरठा– श्रेय प्रदाता आप, श्री श्रेयान्स जिन गाए हैं।
करते हैं हम जाप, आह्वानन् कर निज हृदय।।

ॐ ह्रीं श्रेय प्रदायक श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रेय प्रदायक श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रेय प्रदायक श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(पद्धरि छन्द)

हम चढ़ा रहे यह शुद्ध नीर, जन्मादि रोग की मिटे पीर।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।1।।

ॐ ह्रीं श्रेय प्रदायक श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केसर को लिया साथ, भव ताप नाश हो मेरा नाथ!।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं श्रेय प्रदायक श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत यह लाए धवल आज, अक्षय पद का अब मिले ताज।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं श्रेय प्रदायक श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों के अर्पित करें थाल, हम झुका रहे तव चरण भाल।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।4।।

ॐ ह्रीं श्रेय प्रदायक श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाने लिए हाथ, अब क्षुधा से मुक्ती मिले नाथ।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।5।।

ॐ ह्रीं श्रेय प्रदायक श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम जला रहे हैं यहाँ दीप, अब पहुँचे शिव पद के समीप।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।6।।

ॐ ह्रीं श्रेय प्रदायक श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अब नाश होय प्रभु मोह पास, शिवपुर में मेरा होय वास।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।7।।

ॐ ह्रीं श्रेय प्रदायक श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल चढ़ा रहे हम यहाँ आन, अब मिले शीघ्र ही मोक्ष धाम।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।8।।

ॐ ह्रीं श्रेय प्रदायक श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अर्घ्य चढ़ाते हम अनूप, प्रगटाएँ अपना निज स्वरूप।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।9।।

ॐ ह्रीं श्रेय प्रदायक श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(सोरठा)

पाए गर्भ भगवान्, ज्येष्ठ कृष्ण छठवी दिना।
किए देव गुणगान, उत्सव कीन्हे गर्भ का।।1।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ जन्म कल्याण, फाल्गुन कृष्ण एकादशी।
इन्द्र स्वर्ग से आन, न्हवन कराए मेरु पे।।2।।

ॐ ह्रीं फल्गुनकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा धारे नाथ, फाल्गुन कृष्ण एकादशी ।
चरण झुकाएँ माथ, सुर नर मुनि के इन्द्र सब।।3।।

ॐ ह्रीं फल्गुनकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए केवल ज्ञान, माघ कृष्ण की अमावस।
किए जगत कल्याण, दिव्य देशना आप दे।।4।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा अमावश्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष गये भगवान, श्रावण शुक्ला पूर्णिमा।
पाए मोक्ष कल्याण, तीर्थराज सम्मेद से।।5।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला पूर्णिमायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **श्रेय प्रदायक श्रेयजिन, हुए जो मंगलकार।**
जयमाला गाते चरण, भविजन बारम्बार।।

(चाल छन्द)

श्रेयांश नाथ गुणधारी, इस जग में मंगलकारी।
है सिंहपुरी शुभकारी, जन्मे श्रेयांस त्रिपुरारी।।1।।

नृप विष्णुराज कहलाए, माँ वेणू देवी पाए।
यह अन्तिम गर्भ कहाए, प्रभु जन्म कल्याणक पाए।।2।।

किए रत्नवृष्टी शुभकारी, सुर किए प्रशंसा भारी।
गेण्डा लक्षण शुभ पाए, तन अस्सी धनुष का पाए।।3।।

चौरासी वर्ष की स्वामी, आयू पाए शिवगामी।
लक्ष्मी बसन्त विनशाई, लख मुनिवर दीक्षा पाई।।4।।

तब देव पालकी लाए, प्रभु को वन में पहुँचाए।
प्रभु आतम ध्यान लगाए, फिर केवल ज्ञान जगाए।।5।।

सुर समवशरण बनवाए, सप्त योजन का जो गाए।
प्रभु दिव्य ध्वनी सुनाए, सुर नर पशु मंगल गाए।।6।।

जो सुन के जग के प्राणी, हो जाते सम्यग्ज्ञानी।
वे सम्यक् चारित पाएँ, शुभ मोक्ष मार्ग आपनाएँ।।7।।

दोहा – कर्म नाशकर शिव गये, श्री श्रेयांस जिनराज ।
करते जिनकी अर्चना, भक्ति भाव से आज ।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– कर्म नाशकर के प्रभु, पाए पद निर्वाण।
भव्य जीव जिनका 'विशद', करें श्रेष्ठ गुणगान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

सर्व आचार्य परमेष्ठी अर्घ्य

पूर्वाचार्यश्री आदिसागरजी, का शांतिसागराचार्यप्रवर ।
महावीर कीर्ति वीर सिन्धु शिव, विमल सिन्धु सन्मति सागर ।।
भरत सिन्धु कुन्थुसागर जी, विद्यानन्द विद्यासागर ।
पुष्पदंत गुरु विराग सिन्धुपद, वंदन मेरा विशद सादर ।।

ॐ ह्रीं सर्व आचार्य परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विष्णुकुमार मुनि पूजन

स्थापना

दोहा– वात्सल्य धारी हुए, मुनिवर विष्णुकुमार।
निज उर में आह्वान कर, पूजें बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुने! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुने! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुने! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(तर्ज–माता तू दया करके..........)

जिसको अपना माना, उसने संताप दिया।
यह समझ नहीं आया, फिर भी क्यों राग किया।।
ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है।।1।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव–भव में हे स्वामी!, हमने संताप सहा।
अब सहा नही जाए, प्रभु मैटो द्वेष महा।।
ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है।।2।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन धन परिजन जो हैं, सब नश्वर है माया।
जिस तन में रहते हैं, वह क्षण भंगुर काया।।
ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है।।3।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह काम लुटेरा है, शास्वत गुण लूट रहा।
हम मौन खड़े निर्बल, ना हमसे छूट रहा।।
ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है।।4।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इस क्षुधा रोग से हम, सदियों से सताए हैं।
व्यंजन की औषधि खा, ना तृप्ती पाए हैं।।
ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है।।5।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पर में खोए हैं, पर की महिमा गाई।
इस मोहवली ने प्रभु, निज की सुधि विसराई।।
ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है।।6।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की आँधी से, चेतन गृह विखर गया।
तव दर्शन करके प्रभु, मम चेतन निखर गया।।
ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है।।7।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पाप बीज बोए, शिव फल कैसे पाएँ।
तव अर्चा करके हम, प्रभु सिद्धालय जाएँ।।
ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है।।8।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु कर्मों ने मिलकर, जग में भरमाया है।
अब शिव पद पाने को, यह अर्घ्य चढ़ाया है।।
ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है।।8।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा— पूर्व पुण्य से हे प्रभो!, पाए आपके दर्श।
शांती धारा दे रहें, जागे मम उर हर्ष।।
।।शान्तये शांतिधारा।।

दोहा— पूजा करते आपकी, होके भाव विभोर।
यही भावना है विशद, बढ़ें मोक्ष की ओर।।
।।दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

जप — ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार महामुनये नमः।

जयमाला

दोहा— विष्णु कुमार मुनिवर किए, करुणा कर उपकार।
जयमाला गाते विशद, जिनकी मंगलकार।।

चौपाई

मुनिवर विष्णु कुमार कहाए, पावन जो संयम अपनाए।
धरणी भूषण पर्वत जानो, किए ध्यान जाके शुभ मानो।।1।।
पुष्पदन्त क्षुल्लक जी आए, गुरुवर का सन्देश सुनाए।
ऋद्धि विक्रिया तुमने पाई, जिसकी अब आवश्यकता आई।।2।।
नगर हस्तिनापुर में जानो, श्री अकम्पनाचार्य जी मानो।
सात सौ मुनियों के संग आए, जहाँ बैठकर ध्यान लगाए।।3।।

राजा पद्म राय कहलाए, मंत्री जिसके चार बताए।
बलि प्रह्लाद बृहस्पति जानो, और नमुचि जिनके हैं मानो।।4।।
उज्जैनी के रहने वाले, मुनि के कारण देश निकाले।
मुनि को देख के जो घबड़ाए, राजा से बरदान मँगाए।।5।।
सात दिनों तक राज चलाए, चारों मंत्री यज्ञ रचाए।
मुनियों पर उपसर्ग कराए, मुनिवर समता भाव जगाए।।6।।
विष्णु कुमार मुनी तब आए, बटुक विप्र का भेष बनाए।
बलि आदिक जो राज्य चलाए, उनसे भिक्षा पाने आए।।7।।
तीन पैढ़ भूमि जो पाए, देने का संकल्प कराए।
फिर मुनिवर ऋद्धी प्रगटाए, मेरू गिरि तक पग फैलाए।।8।।
दूजा मानुषोत्तर गिरि धारे, मंत्री तव घबड़ाए सारे।
बलि मंत्री चरणों झुक जाता, पीठ पे अपना पग रखवाता।।9।।
भार सहन बलि ना कर पाया,क्षमादान का शब्द गुँजाया।
झुके चरण में मंत्री सारे,मुनियों का उपसर्ग निवारे।।10।।
घर–घर में तब उत्सव छाया, मुनियों को आहार कराया।
श्रावक सारे खुशी मनाये, कर में रक्षा सूत्र बँधाए।।11।।
श्रावक शुक्ल पूर्णिमा पाए, रक्षाबन्धन पर्व कहाए।
वात्सल्य का पर्व मनेगा, युगों–युगों तक अमर रहेगा।।12।।

(घत्ता छन्द)

श्री मुनिवर ज्ञानी, आतम ध्यानी, दृढ़ श्रद्धानी सुखदानी।
जिनकी शुभ वाणी, शुभ वरदानी, जन जन की है कल्याणी।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– विष्णु कुमार मुनीश पद, जो पूजें धर ध्यान।
'विशद' सौख्य पाके सभी, पावें मोक्ष निधान।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

अकम्पनाचार्यादि सप्तशत ऋषि पूजा

स्थापना

सप्तशतक उपसर्ग जयी ऋषि, जैन जगत में हुए महान।
मोक्षमार्ग के राही अनुपम, करने वाले जग कल्याण।।
विशद साधना करने वाले, स्थिर होकर करते ध्यान।
श्री अकम्पनाचार्य आदि का, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशत मुनेः! समूह अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशत मुनेः! समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशत मुनेः! समूह अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज–सोलहकारण पूजन.........)

श्रद्धा से जल चरण चढ़ाय, त्रय धारा देकर हर्षाय।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज।।
मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सांसारिक सुख प्राणी पाय, गुरु पूजा शिव सुख दिलवाय।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज।।
मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत श्री जिन चरण चढ़ाय, वह अक्षय पदवी को पाय।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज।।
मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धाम, जिनवर के पर विशद प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

विषय वासना है दुखदाय, काम नशाने पुष्प चढ़ाय।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज।।
मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धाम, जिनवर के पर विशद प्रणाम।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यो काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के सारे भोजन खाय, फिर भी तृप्त नहीं हो पाय।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज।।
मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धाम, जिनवर के पर विशद प्रणाम।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमयी शुभ दीप जलाय, मिथ्या तम को पूर्ण नशाय।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज।।
मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धाम, जिनवर के पर विशद प्रणाम।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यो महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध धूप जिन चरण चढ़ाय, अष्ट कर्म को पूर्ण नशाय।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज।।
मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धाम, जिनवर के पर विशद प्रणाम।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ा रहे फल मुक्ति प्रदाय, कर्म फलों की शक्ति नशाय।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज।।
मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धाम, जिनवर के पर विशद प्रणाम।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यो महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय की नौका पाय, पद अनर्घ्य प्राणी प्रगटाय।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज।।
मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धाम, जिनवर के पर विशद प्रणाम।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– दर्पण सम प्रभु ज्ञान में, झलके लोकालोक।
शांती धारा दे रहे, मिटे रोग या शोक।।

।।शान्तये शांति धारा।।

दोहा– गुणानन्त पर्याय को, जाने श्री भगवान।
पुष्पांजलि करते, चरण पाने शिव सोपान।।

।।पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

जयमाला

दोहा— श्री अकम्पनाचार्य जी, आदिक ऋषी महान।
सहन किए उपसर्ग जो, करते हम गुणगान।।

शम्भू छन्द

मोक्षमार्ग के राही बनने, पाया जिनने सद् श्रद्धान।
यथातथ्य वस्तु स्वरूप को, जाना पाके सम्यकज्ञान।।
पंचपाप से विरहित चर्या, कहलाए सम्यक् चारित्र।
इस प्रकार रत्नत्रय पावन, धारा आपने परम पवित्र।।1।।

पंच महाव्रत समिति इन्द्रिय, पंच के होके जयकारी।
षट आवश्यक पालन करने, वाले पावन अनगारी।।
केशलुंच एकासन स्थित, भोजन करते क्षिति शयन।
मंजन न्हवन चेल से विरहित, ईर्यापथ से करें गमन।।2।।

विषयाशा को तजने वाले, हैं आरम्भ परिग्रह हीन।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहकर, रहते हैं निज आतम लीन।।
ऐसे परम तपस्वी साधू, करते हैं निज पर कल्याण।
विशद भाव से करते हैं हम, पावन ऋषियों का गुणगान।।3।।

दोहा— नेता मुक्ती मार्ग के, मुक्ति वधू के कंत।
ऋषिवर अनगारी विशद, अपनाए शिव पंथ।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा— भाते हैं हम भावना, कभी ना हो उपसर्ग।
भव्य जीव इस लोक में, पावें सब अपवर्ग।।

।।इत्याशीर्वादःपुष्पांजलि क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

दोहा– संयम व तप त्याग की, महिमा अपरम्पार।
सप्त शतक ऋषिराज की, बोलें जय जयकार।।

।।अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

1. ॐ ह्रूँ: अकम्पन सुरिश्वराय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
2. ॐ ह्रः अरिजित–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
3. ॐ ह्रः अर्हं मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
4. ॐ ह्रः अनन्तवीर्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
5. ॐ ह्रः अर्ककीर्ति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
6. ॐ ह्रः अमृतचन्द्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
7. ॐ ह्रः अप्रमित–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
8. ॐ ह्रः अनुपम–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
9. ॐ ह्रः अनेकान्त–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
10. ॐ ह्रः अजित–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
11. ॐ ह्रः अभेद्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
12. ॐ ह्रः अक्षय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
13. ॐ ह्रः अभय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
14. ॐ ह्रः आरिञ्जय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
15. ॐ ह्रः अनिंद्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
16. ॐ ह्रः अभिनंदन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
17. ॐ ह्रः अमित–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
18. ॐ ह्रः अकलंक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
19. ॐ ह्रः अगम्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
20. ॐ ह्रः अनंत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
21. ॐ ह्रः अरह–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
22. ॐ ह्रः अलेप–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
23. ॐ ह्रः अपूर्व–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

24. ॐ ह्रः अमूर्त–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
25. ॐ ह्रः अगंध–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
26. ॐ ह्रः अरूप–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
27. ॐ ह्रः अरस –मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
28. ॐ ह्रः अवर्ण –मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
29. ॐ ह्रः अचिंत्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
30. ॐ ह्रः अक्षर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
31. ॐ ह्रः अबंध–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
32. ॐ ह्रः अजय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
33. ॐ ह्रः अजर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
34. ॐ ह्रः अम्लान–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
35. ॐ ह्रः अक्रोध –मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
36. ॐ ह्रः अलोभ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
37. ॐ ह्रः अच्युत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
38. ॐ ह्रः अव्यय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
39. ॐ ह्रः अचल–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
40. ॐ ह्रः अरज–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
41. ॐ ह्रः अतिवीर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
42. ॐ ह्रः अमृत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
43. ॐ ह्रः असंग–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
44. ॐ ह्रः अशोक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
45. ॐ ह्रः अनुत्तर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
46. ॐ ह्रः अतुल–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
47. ॐ ह्रः अतिथि–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
48. ॐ ह्रः अभिवादक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
49. ॐ ह्रः अन्वेषक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
50. ॐ ह्रः अवमोचक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
51. ॐ ह्रः अयाचक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

52. ॐ ह्रः अनुगमन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
53. ॐ ह्रः अनुशरण–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
54. ॐ ह्रः अनुभव–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
55. ॐ ह्रः अनुभूति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
56. ॐ ह्रः अनाकुल–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
57. ॐ ह्रः अनाथनाथ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
58. ॐ ह्रः अन्तर्प्रज्ञ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
59. ॐ ह्रः अविनाश–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
60. ॐ ह्रः अपवर्ग–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
61. ॐ ह्रः अनुज्ञाता–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
62. ॐ ह्रः अनाहारी–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
63. ॐ ह्रः अन्तर्लीन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
64. ॐ ह्रः अतन्द्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
65. ॐ ह्रः अनिन्द्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
66. ॐ ह्रः अधिनायक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
67. ॐ ह्रः अस्तित्व–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
68. ॐ ह्रः अगुरुलघु–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
69. ॐ ह्रः अवगाहन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
70. ॐ ह्रः अप्रमत्त–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
71. ॐ ह्रः अविघातक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
72. ॐ ह्रः अध्ययन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
73. ॐ ह्रः अध्यापन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
74. ॐ ह्रः अतीव–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
75. ॐ ह्रः अखिल–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
76. ॐ ह्रः अक्षत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
77. ॐ ह्रः अक्षुण्ण–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
78. ॐ ह्रः अजस्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
79. ॐ ह्रः अमल–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

80. ॐ ह्रः अभिमन्यु–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

81. ॐ ह्रः अनिरुद्ध–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

82. ॐ ह्रः अंगद–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

83. ॐ ह्रः अपाय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

84. ॐ ह्रः अरुण–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

85. ॐ ह्रः अरिष्ट–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

86. ॐ ह्रः अर्जुन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

87. ॐ ह्रः अपराजित–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

88. ॐ ह्रः अलांछित–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

89. ॐ ह्रः अभयघोष–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

90. ॐ ह्रः आशीष–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

91. ॐ ह्रः आनंद–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

92. ॐ ह्रः आकाश–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

93. ॐ ह्रः अमलप्रभ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

94. ॐ ह्रः अतिक्रान्त–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

95. ॐ ह्रः अंगिर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

96. ॐ ह्रः अनिवर्तक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

97. ॐ ह्रः आत्मा–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

98. ॐ ह्रः आत्मज्ञान–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

99. ॐ ह्रः आत्मध्यान–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

100. ॐ ह्रः आर्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

प्रथम शतक के हम यहाँ, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।
सप्त शतक मुनि पूजते, पाने सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रः अकम्पनाचार्यादि प्रथम शतक ऋषिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. ॐ ह्रः आत्मज्ञ–मुनीनद्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
2. ॐ ह्रः आत्मलीन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
3. ॐ ह्रः आत्मस्थ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
4. ॐ ह्रः आगमपथिक–मुनीन्द्राय नमः ..... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
5. ॐ ह्रः आदित्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
6. ॐ ह्रः आर्जव–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
7. ॐ ह्रः आदि–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
8. ॐ ह्रः आराध्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
9. ॐ ह्रः आवश्यक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
10. ॐ ह्रः इन्द्रजीत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
11. ॐ ह्रः इन्द्रेश–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
12. ॐ ह्रः ईशान–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
13. ॐ ह्रः उदार–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
14. ॐ ह्रः उद्योतक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
15. ॐ ह्रः उद्‌बोधक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
16. ॐ ह्रः उपदेशक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
17. ॐ ह्रः उत्तमार्थ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
18. ॐ ह्रः उद्‌घोष–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
19. ॐ ह्रः उद्धार–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
20. ॐ ह्रः उत्तम–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
21. ॐ ह्रः उत्कर्ष–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
22. ॐ ह्रः उत्साह–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
23. ॐ ह्रः उत्तीर्ण–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
24. ॐ ह्रः उन्नत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
25. ॐ ह्रः उन्नयन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
26. ॐ ह्रः उत्सर्ग–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

27. ॐ ह्रः उद्बोध–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
28. ॐ ह्रः उमास्वामी –मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
29. ॐ ह्रः उद्यम–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
30. ॐ ह्रः उत्थान–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
31. ॐ ह्रः एकहार–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
32. ॐ ह्रः एकाग्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
33. ॐ ह्रः एकांत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
34. ॐ ह्रः ऐणिक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
35. ॐ ह्रः ओजस्वी–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
36. ॐ ह्रः ओंकार–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
37. ॐ ह्रः ओम–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
38. ॐ ह्रः करपात्री–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
39. ॐ ह्रः करुणामूर्ति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
40. ॐ ह्रः कुन्द–कुन्द–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
41. ॐ ह्रः कुलीन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
42. ॐ ह्रः कुलभूषण–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
43. ॐ ह्रः करुणाद्रि–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
44. ॐ ह्रः कुशाग्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
45. ॐ ह्रः कर्मशूर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
46. ॐ ह्रः कार्तिकेय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
47. ॐ ह्रः क्रियानिष्ठ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
48. ॐ ह्रः कुन्थु–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
49. ॐ ह्रः कृतज्ञ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
50. ॐ ह्रः कर्तव्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
51. ॐ ह्रः करुणा–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
52. ॐ ह्रः कल्पवृक्ष–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

53. ॐ ह्रः कर्मठ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
54. ॐ ह्रः कृतचेता–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
55. ॐ ह्रः कुलपुत्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
56. ॐ ह्रः कुसुमांजलि–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
57. ॐ ह्रः ख्यापक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
58. ॐ ह्रः गुणभद्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
59. ॐ ह्रः गजकुमार–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
60. ॐ ह्रः गुणधर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
61. ॐ ह्रः गुप्ति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
62. ॐ ह्रः गौतम–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
63. ॐ ह्रः गुणग्राही–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
64. ॐ ह्रः गुणोपेत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
65. ॐ ह्रः गौरव–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
66. ॐ ह्रः गुणज्ञ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
67. ॐ ह्रः गुरुदत्त–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
68. ॐ ह्रः गहन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
69. ॐ ह्रः चन्द्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
70. ॐ ह्रः चिलात–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
71. ॐ ह्रः चारित्रमूर्ति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
72. ॐ ह्रः चारुदत्त–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
73. ॐ ह्रः चारित्रभूषण–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
74. ॐ ह्रः चिन्तक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
75. ॐ ह्रः चिदानंद–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
76. ॐ ह्रः चिरंजीव–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
77. ॐ ह्रः चन्द्रानन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
78. ॐ ह्रः चन्द्रगुप्त–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

79. ॐ ह्रः चर्चित–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

80. ॐ ह्रः चाणक्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

81. ॐ ह्रः चैतन्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

82. ॐ ह्रः जयसेन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

83. ॐ ह्रः ज्येष्ठ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

84. ॐ ह्रः जयकुमार–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

85. ॐ ह्रः जिनेन्द्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

86. ॐ ह्रः जितेन्द्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

87. ॐ ह्रः जिनसेन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

88. ॐ ह्रः जयन्त–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

89. ॐ ह्रः जयघोष–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

90. ॐ ह्रः जयकीर्ति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

91. ॐ ह्रः जय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

92. ॐ ह्रः जिनचन्द्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

93. ॐ ह्रः जिनेन्द्रबुद्धि–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

94. ॐ ह्रः तपस्वी–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

95. ॐ ह्रः तपकार–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

96. ॐ ह्रः तपोधन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

97. ॐ ह्रः तपोपूत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

98. ॐ ह्रः तपोमही–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

99. ॐ ह्रः तपोधर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

100. ॐ ह्रः तपोनायक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

द्वितिय शतक के हम यहाँ, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।

सप्त शतक मुनि पूजते, पाने सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं अकम्पनाचार्यादि द्वितिय शतक ऋषिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. ॐ ह्रः तपोमूर्ति–मुनीनद्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
2. ॐ ह्रः तपोनिधान–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
3. ॐ ह्रः तीर्थ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
4. ॐ ह्रः तत्त्वज्ञ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
5. ॐ ह्रः तपकुंभ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
6. ॐ ह्रः तप–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
7. ॐ ह्रः तपोव्रती–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
8. ॐ ह्रः तपोनिधि–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
9. ॐ ह्रः त्याग–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
10. ॐ ह्रः तत्त्वविद–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
11. ॐ ह्रः तपनांशु–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
12. ॐ ह्रः तर्क–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
13. ॐ ह्रः तटस्थ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
14. ॐ ह्रः दमधर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
15. ॐ ह्रः दमकीर्ति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
16. ॐ ह्रः दृढात्म–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
17. ॐ ह्रः देवसेन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
18. ॐ ह्रः दिव्यांश–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
19. ॐ ह्रः दयामूर्ति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
20. ॐ ह्रः दानवीर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
21. ॐ ह्रः दिव्यांक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
22. ॐ ह्रः दृढव्रत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
23. ॐ ह्रः दूरदर्शी–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
24. ॐ ह्रः देशभूषण–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
25. ॐ ह्रः दीनदयालु–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
26. ॐ ह्रः दयाद्रि–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

27. ॐ ह्रः दृष्टिपूत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
28. ॐ ह्रः दयापूत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
29. ॐ ह्रः देशज्ञ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
30. ॐ ह्रः दयार्क–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
31. ॐ ह्रः द्वीपायन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
32. ॐ ह्रः दुर्लभ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
33. ॐ ह्रः दिव्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
34. ॐ ह्रः देवयश–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
35. ॐ ह्रः देवपुत्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
36. ॐ ह्रः देवपाल–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
37. ॐ ह्रः धर्मघोष–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
38. ॐ ह्रः धैर्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
39. ॐ ह्रः धीर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
40. ॐ ह्रः ध्यान–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
41. ॐ ह्रः धर्मधर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
42. ॐ ह्रः धर्मतीर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
43. ॐ ह्रः धन्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
44. ॐ ह्रः धर्मसेन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
45. ॐ ह्रः धवल–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
46. ॐ ह्रः ध्येय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
47. ॐ ह्रः ध्याता–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
48. ॐ ह्रः धर्मपरायण–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
49. ॐ ह्रः धर्ममूर्ति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
50. ॐ ह्रः ध्यानमूर्ति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
51. ॐ ह्रः धर्मवीर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
52. ॐ ह्रः धीमान–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

53. ॐ ह्रः धर्मधीर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
54. ॐ ह्रः धर्मवर्धक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
55. ॐ ह्रः धर्मरक्षक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
56. ॐ ह्रः ध्यानस्थ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
57. ॐ ह्रः ध्यानमग्न–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
58. ॐ ह्रः धर्मपूत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
59. ॐ ह्रः धर्मज्ञ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
60. ॐ ह्रः धर्मनिष्ठ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
61. ॐ ह्रः धर्मधुर्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
62. ॐ ह्रः धर्मशूर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
63. ॐ ह्रः धर्मसार–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
64. ॐ ह्रः धर्म–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
65. ॐ ह्रः नेमप्रभ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
66. ॐ ह्रः निष्कषाय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
67. ॐ ह्रः निष्पाप–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
68. ॐ ह्रः निर्वेग–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
69. ॐ ह्रः निरापद–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
70. ॐ ह्रः नलिन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
71. ॐ ह्रः निष्कंप–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
72. ॐ ह्रः निर्वेद–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
73. ॐ ह्रः निष्पंद–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
74. ॐ ह्रः निर्विण्ण–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
75. ॐ ह्रः निश्चल–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
76. ॐ ह्रः निराडंबर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
77. ॐ ह्रः निर्दोष–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
78. ॐ ह्रः निर्लोभ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

79. ॐ ह्रः निर्मान–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
80. ॐ ह्रः निरायुध–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
81. ॐ ह्रः निस्पृह–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
82. ॐ ह्रः निरारंभ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
83. ॐ ह्रः निरंबर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
84. ॐ ह्रः निर्ग्रन्थ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
85. ॐ ह्रः निःसंग–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
86. ॐ ह्रः निर्ममत्व–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
87. ॐ ह्रः नियोग–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
88. ॐ ह्रः निःस्वार्थ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
89. ॐ ह्रः नरार्चित–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
90. ॐ ह्रः निकलंक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
91. ॐ ह्रः निर्देश–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
92. ॐ ह्रः न्यायमित्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
93. ॐ ह्रः निराशंक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
94. ॐ ह्रः निरातंक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
95. ॐ ह्रः निराकुल–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
96. ॐ ह्रः नय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
97. ॐ ह्रः नीति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
98. ॐ ह्रः नियोजक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
99. ॐ ह्रः निरासंग–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
100. ॐ ह्रः न्याय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

तृतिय शतक के हम यहाँ, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।
सप्त शतक मुनि पूजते, पाने सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं अकम्पनाचार्यादि तृतिय शतक ऋषिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. ॐ ह्रः निरंजन–मुनीनद्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
2. ॐ ह्रः नंदन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
3. ॐ ह्रः निष्पक्ष–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
4. ॐ ह्रः नागदत्त–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
5. ॐ ह्रः नंद–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
6. ॐ ह्रः निर्मम–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
7. ॐ ह्रः निर्भय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
8. ॐ ह्रः निष्कलंक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
9. ॐ ह्रः नमि–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
10. ॐ ह्रः नेमि–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
11. ॐ ह्रः निर्विध्न–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
12. ॐ ह्रः निष्कल–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
13. ॐ ह्रः निरामय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
14. ॐ ह्रः निष्क्रिय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
15. ॐ ह्रः निराहार–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
16. ॐ ह्रः निर्मोह–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
17. ॐ ह्रः निर्मद–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
18. ॐ ह्रः निर्मल–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
19. ॐ ह्रः निपुण–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
20. ॐ ह्रः निकुल–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
21. ॐ ह्रः नियम–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
22. ॐ ह्रः निसर्ग–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
23. ॐ ह्रः नीरोग–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
24. ॐ ह्रः नेमिचंद्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
25. ॐ ह्रः पाक्षिक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
26. ॐ ह्रः पूर्णव्रत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

27. ॐ ह्रः पुण्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
28. ॐ ह्रः पावन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
29. ॐ ह्रः पवित्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
30. ॐ ह्रः पुष्पक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
31. ॐ ह्रः पूर्ण–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
32. ॐ ह्रः पृष्ठक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
33. ॐ ह्रः नरमार्थ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
34. ॐ ह्रः पुण्यमणि–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
35. ॐ ह्रः पुण्यप्रभ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
36. ॐ ह्रः पुराण–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
37. ॐ ह्रः पातकी–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
38. ॐ ह्रः परायण–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
39. ॐ ह्रः पराङ्मुख–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
40. ॐ ह्रः पक्षघर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
41. ॐ ह्रः परापर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
42. ॐ ह्रः परामर्श–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
43. ॐ ह्रः परिपूर्ण–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
44. ॐ ह्रः पीयूष–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
45. ॐ ह्रः पद्म–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
46. ॐ ह्रः पार्श्व–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
47. ॐ ह्रः पूज्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
48. ॐ ह्रः पुष्पदंत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
49. ॐ ह्रः परम–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
50. ॐ ह्रः पुरातन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
51. ॐ ह्रः पात्रकेशरी–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
52. ॐ ह्रः परमानंद–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

53. ॐ ह्रः परमवीर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
54. ॐ ह्रः परमधीर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
55. ॐ ह्रः परमेश्वर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
56. ॐ ह्रः परमतीर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
57. ॐ ह्रः ब्रह्मदेव–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
58. ॐ ह्रः बाहुबलि–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
59. ॐ ह्रः बड़भाग्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
60. ॐ ह्रः बुद्ध–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
61. ॐ ह्रः ब्रह्महृदय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
62. ॐ ह्रः ब्रह्मोत्तर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
63. ॐ ह्रः ब्रह्म–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
64. ॐ ह्रः बाहु–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
65. ॐ ह्रः बालि–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
66. ॐ ह्रः ब्रह्मदत्त–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
67. ॐ ह्रः बहुमूल्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
68. ॐ ह्रः भवदेव–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
69. ॐ ह्रः भिक्षुक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
70. ॐ ह्रः भीम–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
71. ॐ ह्रः भरत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
72. ॐ ह्रः भरतार–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
73. ॐ ह्रः भद्रमुख–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
74. ॐ ह्रः भद्रबाहु–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
75. ॐ ह्रः भद्रंकर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
76. ॐ ह्रः भूधर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
77. ॐ ह्रः भुजंगम–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
78. ॐ ह्रः भिक्षाहि–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

79. ॐ ह्रः भदन्त–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
80. ॐ ह्रः महात्मा–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
81. ॐ ह्रः महापुरुष–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
82. ॐ ह्रः मानतुंग–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
83. ॐ ह्रः मंगल–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
84. ॐ ह्रः महाभद्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
85. ॐ ह्रः मुनिसुव्रत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
86. ॐ ह्रः महासाधु–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
87. ॐ ह्रः मुंडित–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
88. ॐ ह्रः महाश्रमण–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
89. ॐ ह्रः मुक्ति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
90. ॐ ह्रः महीसुत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
91. ॐ ह्रः महन्त–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
92. ॐ ह्रः महामंत्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
93. ॐ ह्रः महावीर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
94. ॐ ह्रः मार्दव–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
95. ॐ ह्रः यशस्वी–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
96. ॐ ह्रः यशोधर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
97. ॐ ह्रः यतिभूषण–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
98. ॐ ह्रः योगीन्दु–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
99. ॐ ह्रः यतिवृषभ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
100. ॐ ह्रः यशवंत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

चतुर्थ शतक के हम यहाँ, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।
सप्त शतक मुनि पूजते, पाने सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रः अकम्पनाचार्यादि चतुर्थ शतक ऋषिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. ॐ ह्रः यशकीर्ति–मुनीनद्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
2. ॐ ह्रः यत्नधर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
3. ॐ ह्रः योग–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
4. ॐ ह्रः योगीन्द्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
5. ॐ ह्रः यतीन्द्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
6. ॐ ह्रः युगमंधर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
7. ॐ ह्रः यत्नेश–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
8. ॐ ह्रः यतीश–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
9. ॐ ह्रः यत्नाकर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
10. ॐ ह्रः यथाचार–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
11. ॐ ह्रः यथालब्ध–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
12. ॐ ह्रः युधिष्ठिर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
13. ॐ ह्रः रत्नाकर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
14. ॐ ह्रः रम्यक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
15. ॐ ह्रः रक्ष–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
16. ॐ ह्रः रसिक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
17. ॐ ह्रः रविषेण–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
18. ॐ ह्रः रुचक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
19. ॐ ह्रः लोकाग्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
20. ॐ ह्रः लोकोत्तर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
21. ॐ ह्रः लोकभूषण–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
22. ॐ ह्रः लोकप्रिय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
23. ॐ ह्रः लोकेश–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
24. ॐ ह्रः लोकज्ञ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
25. ॐ ह्रः विमल–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
26. ॐ ह्रः वृषभानन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

27. ॐ ह्रः विशालकीर्ति –मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
28. ॐ ह्रः वज्रधर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
29. ॐ ह्रः वीरसेन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
30. ॐ ह्रः विपुल–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
31. ॐ ह्रः विमलप्रभ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
32. ॐ ह्रः विमलेश्वर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
33. ॐ ह्रः वाचस्पति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
34. ॐ ह्रः वृषभसेन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
35. ॐ ह्रः वरदत्त–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
36. ॐ ह्रः वरिष्ठ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
37. ॐ ह्रः वर्चस्व–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
38. ॐ ह्रः विनय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
39. ॐ ह्रः वैभव–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
40. ॐ ह्रः वारिषेण–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
41. ॐ ह्रः विद्युतचर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
42. ॐ ह्रः विनमि–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
43. ॐ ह्रः वादिराज–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
44. ॐ ह्रः वज्रकुमार–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
45. ॐ ह्रः वज्रनाभि–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
46. ॐ ह्रः वनचर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
47. ॐ ह्रः वनवासी–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
48. ॐ ह्रः विपाप–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
49. ॐ ह्रः वात्सल्यमूर्ति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
50. ॐ ह्रः विरक्त–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
51. ॐ ह्रः व्रतपालक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
52. ॐ ह्रः वरदान–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

53. ॐ ह्रः विशिष्ट–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

54. ॐ ह्रः विज्ञान–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

55. ॐ ह्रः विशुद्धस्थ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

56. ॐ ह्रः विमुक्त–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

57. ॐ ह्रः विचारक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

58. ॐ ह्रः विश्वजित–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

59. ॐ ह्रः विख्यात–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

60. ॐ ह्रः विख्येय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

61. ॐ ह्रः विशारद–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

62. ॐ ह्रः विप्रभ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

63. ॐ ह्रः विनीत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

64. ॐ ह्रः वैजयन्त–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

65. ॐ ह्रः विनिमेष–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

66. ॐ ह्रः वासूपूज्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

67. ॐ ह्रः विवर्धन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

68. ॐ ह्रः विशाल–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

69. ॐ ह्रः विशोक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

70. ॐ ह्रः विमोह–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

71. ॐ ह्रः विश्वास–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

72. ॐ ह्रः वरद–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

73. ॐ ह्रः वर्द्धमान–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

74. ॐ ह्रः वंदक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

75. ॐ ह्रः वाग्मी–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

76. ॐ ह्रः वस्तुत्व–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

77. ॐ ह्रः विरज–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

78. ॐ ह्रः वेदान्त–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

79. ॐ ह्रः वीर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
80. ॐ ह्रः वृषभ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
81. ॐ ह्रः विज्ञेय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
82. ॐ ह्रः विधाता–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
83. ॐ ह्रः विशंक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
84. ॐ ह्रः विक्रम–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
85. ॐ ह्रः विजय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
86. ॐ ह्रः विभद्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
87. ॐ ह्रः विजर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
88. ॐ ह्रः विश्वस्त–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
89. ॐ ह्रः वैराग्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
90. ॐ ह्रः विवेकवान–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
91. ॐ ह्रः विनोद–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
92. ॐ ह्रः शुभकर्म–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
93. ॐ ह्रः शांतिमूर्ति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
94. ॐ ह्रः शिक्षक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
95. ॐ ह्रः शुद्धाशय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
96. ॐ ह्रः शुद्धातम–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
97. ॐ ह्रः शिष्ट–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
98. ॐ ह्रः शिवपंथी–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
99. ॐ ह्रः शीर्षस्थ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
100. ॐ ह्रः शांति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

पंचम शतक के हम यहाँ, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।
सप्त शतक मुनि पूजते, पाने सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं अकम्पनाचार्यादि पंचम शतक ऋषिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. ॐ ह्रः शिवार्य–मुनीनद्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
2. ॐ ह्रः शकटाल–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
3. ॐ ह्रः शाश्वत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
4. ॐ ह्रः शीतल–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
5. ॐ ह्रः शौर्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
6. ॐ ह्रः शास्त्रस्थ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
7. ॐ ह्रः शील–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
8. ॐ ह्रः शिवगण–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
9. ॐ ह्रः शुद्धमति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
10. ॐ ह्रः शांताश्चेति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
11. ॐ ह्रः सीमंधर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
12. ॐ ह्रः सुजात–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
13. ॐ ह्रः सुबाहु–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
14. ॐ ह्रः संचालक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
15. ॐ ह्रः साक्ष्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
16. ॐ ह्रः संयम–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
17. ॐ ह्रः सुतप–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
18. ॐ ह्रः सुव्रत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
19. ॐ ह्रः स्वयंप्रभु–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
20. ॐ ह्रः सुनय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
21. ॐ ह्रः संस्कार–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
22. ॐ ह्रः साहित्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
23. ॐ ह्रः सुदर्शन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
24. ॐ ह्रः सूरप्रभ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
25. ॐ ह्रः सुभग–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
26. ॐ ह्रः समय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

27. ॐ ह्रः सौम्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
28. ॐ ह्रः सुहित–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
29. ॐ ह्रः स्वयंभू–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
30. ॐ ह्रः सुगुप्त–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
31. ॐ ह्रः सर्वातमभूत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
32. ॐ ह्रः सुपार्श्व–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
33. ॐ ह्रः समाधिगुप्त–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
34. ॐ ह्रः सुविधि–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
35. ॐ ह्रः सर्वोच्च –मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
36. ॐ ह्रः सोमकीर्ति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
37. ॐ ह्रः संधान–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
38. ॐ ह्रः सुघोष–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
39. ॐ ह्रः संभव–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
40. ॐ ह्रः सुस्थिर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
41. ॐ ह्रः सुमति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
42. ॐ ह्रः सुदत्त–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
43. ॐ ह्रः समन्तभद्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
44. ॐ ह्रः सहिष्णु–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
45. ॐ ह्रः स्वयंप्रभ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
46. ॐ ह्रः सनातन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
47. ॐ ह्रः सर्वज्ञ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
48. ॐ ह्रः संचालक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
49. ॐ ह्रः संभाषण–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
50. ॐ ह्रः सत्याग्रह–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
51. ॐ ह्रः सुभाषक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
52. ॐ ह्रः सुदर्शनमूर्ति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

53. ॐ ह्रः सुशासक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
54. ॐ ह्रः स्थितिप्रज्ञ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
55. ॐ ह्रः सार्थक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
56. ॐ ह्रः संस्थान–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
57. ॐ ह्रः संवेग–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
58. ॐ ह्रः सुसंस्कृत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
59. ॐ ह्रः संरक्षक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
60. ॐ ह्रः स्तुत्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
61. ॐ ह्रः सुशील–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
62. ॐ ह्रः सुपात्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
63. ॐ ह्रः सुकुमाल–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
64. ॐ ह्रः सात्विक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
65. ॐ ह्रः सद्ध्यान–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
66. ॐ ह्रः सद्ज्ञान–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
67. ॐ ह्रः सुरार्चित–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
68. ॐ ह्रः समाधि–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
69. ॐ ह्रः संवेदन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
70. ॐ ह्रः संतोष–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
71. ॐ ह्रः साधक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
72. ॐ ह्रः समन्वय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
73. ॐ ह्रः सुप्रबुद्ध–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
74. ॐ ह्रः सुमनस–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
75. ॐ ह्रः सुरसमिति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
76. ॐ ह्रः संजयन्त–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
77. ॐ ह्रः सारस्वत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
78. ॐ ह्रः समकित–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

79. ॐ ह्रः सुबुद्धि–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
80. ॐ ह्रः सुकौशल–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
81. ॐ ह्रः सनत्कुमार–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
82. ॐ ह्रः सुश्रुत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
83. ॐ ह्रः संयत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
84. ॐ ह्रः सहयोगी–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
85. ॐ ह्रः सर्वमान्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
86. ॐ ह्रः संवर्धित–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
87. ॐ ह्रः समाधान–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
88. ॐ ह्रः संकल्प–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
89. ॐ ह्रः सुदृढ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
90. ॐ ह्रः सुगुण–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
91. ॐ ह्रः सुभद्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
92. ॐ ह्रः समीचीन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
93. ॐ ह्रः सुधर्म–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
94. ॐ ह्रः सद्धर्म–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
95. ॐ ह्रः समर्थ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
96. ॐ ह्रः सूर्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
97. ॐ ह्रः सर्वार्थ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
98. ॐ ह्रः सुसिद्ध–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
99. ॐ ह्रः समर्पित–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
100. ॐ ह्रः सहदेव–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

षष्ठ शतक के हम यहाँ, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।
सप्त शतक मुनि पूजते, पाने सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं अकम्पनाचार्यादि षष्ठ शतक ऋषिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. ॐ ह्रः सौमनस–मुनीनद्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
2. ॐ ह्रः सवृद्धि–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
3. ॐ ह्रः सत्कर्म–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
4. ॐ ह्रः सुसंस्कार–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
5. ॐ ह्रः संवर्धक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
6. ॐ ह्रः सकारात्मक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
7. ॐ ह्रः स्वर्णिम–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
8. ॐ ह्रः संभावना–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
9. ॐ ह्रः समता–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
10. ॐ ह्रः सम्यक्त्व–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
11. ॐ ह्रः सुयश–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
12. ॐ ह्रः सौभ्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
13. ॐ ह्रः सुधेय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
14. ॐ ह्रः हितंकर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
15. ॐ ह्रः हितेन्द्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
16. ॐ ह्रः हितेश–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
17. ॐ ह्रः हेम–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
18. ॐ ह्रः हर्षित–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
19. ॐ ह्रः हर्षवर्धन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
20. ॐ ह्रः हेमाभ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
21. ॐ ह्रः हर्षयत्नु–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
22. ॐ ह्रः हर्षालु–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
23. ॐ ह्रः हारिद्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
24. ॐ ह्रः क्षेमंकर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
25. ॐ ह्रः क्षमामूर्ति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
26. ॐ ह्रः क्षेम–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

27. ॐ ह्रः क्षीणकाय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

28. ॐ ह्रः क्षमा –मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

29. ॐ ह्रः क्षेमंधर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

30. ॐ ह्रः क्षेत्रज्ञ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

31. ॐ ह्रः ज्ञान–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

32. ॐ ह्रः ज्ञानार्णव–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

33. ॐ ह्रः ज्ञानमूर्ति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

34. ॐ ह्रः ज्ञानाद्रि–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

35. ॐ ह्रः ज्ञानस्थ –मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

36. ॐ ह्रः प्रणव–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

37. ॐ ह्रः प्रमाण–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

38. ॐ ह्रः प्रणिधि–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

39. ॐ ह्रः प्रशम–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

40. ॐ ह्रः प्रफुल्ल–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

41. ॐ ह्रः प्रखर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

42. ॐ ह्रः प्रशान्त–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

43. ॐ ह्रः प्रदीप्त–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

44. ॐ ह्रः प्रबुद्ध–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

45. ॐ ह्रः प्रेरणामूर्ति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

46. ॐ ह्रः प्रशस्त–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

47. ॐ ह्रः प्रयत्न–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

48. ॐ ह्रः प्रेष्ठ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

49. ॐ ह्रः प्रतिपादक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

50. ॐ ह्रः प्रतिपालक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

51. ॐ ह्रः प्रक्षाल–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

52. ॐ ह्रः प्रतिपाल–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

53. ॐ ह्रः प्रतिज्ञा–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
54. ॐ ह्रः प्रतिभा–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
55. ॐ ह्रः प्रमेयत्व–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
56. ॐ ह्रः प्रबोधक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
57. ॐ ह्रः प्रकर्ष–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
58. ॐ ह्रः प्रवीण–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
59. ॐ ह्रः प्रत्यय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
60. ॐ ह्रः प्रत्यक्ष–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
61. ॐ ह्रः प्रोष्ठिल–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
62. ॐ ह्रः प्राणत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
63. ॐ ह्रः प्रभाचन्द्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
64. ॐ ह्रः प्रवर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
65. ॐ ह्रः प्रभंकर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
66. ॐ ह्रः प्रकृष्ट–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
67. ॐ ह्रः प्रेक्षा–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
68. ॐ ह्रः प्रवचन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
69. ॐ ह्रः प्रसाद–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
70. ॐ ह्रः प्राधीत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
71. ॐ ह्रः प्रयोग–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
72. ॐ ह्रः प्रभाव–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
73. ॐ ह्रः प्रियविज्ञ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
74. ॐ ह्रः प्रियव्रत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
75. ॐ ह्रः प्रियवाद–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
76. ॐ ह्रः प्रतिमूर्ति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
77. ॐ ह्रः प्रवक्ता–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
78. ॐ ह्रः प्रसारक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

79. ॐ ह्रः प्रीतिंकर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
80. ॐ ह्रः प्रहारक–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
81. ॐ ह्रः प्रणम्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
82. ॐ ह्रः प्रभात–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
83. ॐ ह्रः श्रद्धेय–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
84. ॐ ह्रः श्रुतज्ञ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
85. ॐ ह्रः श्रीधर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
86. ॐ ह्रः श्रीपाल–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
87. ॐ ह्रः श्रीदत्त–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
88. ॐ ह्रः श्रीनिर्वाण–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
89. ॐ ह्रः श्रीभद्र–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
90. ॐ ह्रः श्रेयांस–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
91. ॐ ह्रः श्री महापद्म–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
92. ॐ ह्रः श्री धन–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
93. ॐ ह्रः श्री मूर्ति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
94. ॐ ह्रः श्री कीर्ति–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
95. ॐ ह्रः श्रुतधर–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
96. ॐ ह्रः श्री मान–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
97. ॐ ह्रः श्रेष्ठ–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
98. ॐ ह्रः श्रुत–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
99. ॐ ह्रः ऋषिमान्य–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
100. ॐ ह्रः ऋद्धेश–मुनीन्द्राय नमः .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

सप्तम शतक के हम यहाँ, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।
सप्त शतक मुनि पूजते, पाने सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं अकम्पनाचार्यादि सप्तम् शतक ऋषिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप ले साथ।
अर्चा करते भाव से, झुका चरण में माथ।।

ॐ ह्रीं सप्तशप्तमुनिवरेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप– ॐ ह्रीं अकम्पनाचार्यादिक सप्तशत मुनिवरेभ्यो नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा– वात्सल्य का पर्व यह, जग में मंगलकार।
गाते हैं जयमालिका, करके जय जयकार।।

चौबोला छन्द

उज्जयिनी के नृप श्री वर्मा, के मंत्री थे चार विशेष।
बलि, प्रहलाद, बृहस्पति, नमुचि, मिथ्यावादी रहे अशेष।।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, सप्त शतक थे बहुगुणवान।
दर्शन करके नृप श्री वर्मा, प्रमुदित मन में हुआ महान्।।1।।

अशुभ निमित्त जानकर गुरु ने, मौन का दीन्हा था आदेश।
शिरोधार्य करके मुनियों ने, पालन कीन्हा जिसे विशेष।।
श्रुत सागर मुनि सुन न पाए, जो थे ज्ञानी श्रेष्ठ महान्।
चर्या करके लौट रहे थे, मंत्री करते तब अपमान।।2।।

अज्ञानी होते मुनि सारे, जानें क्या तत्त्वों का सार।
सुनकर मुनि मंत्री से बोले, तुम क्यों करते गलत प्रचार।।
वाद–विवाद हुआ मुनिवर से, सारे मंत्री माने हार।
अपमानित होकर रात्रि में, मुनि पर कीन्हे खड्‌ग प्रहार।।3।।

कीलित किया क्षेत्र रक्षक ने, सर्व मंत्रियों को उस हाल।
राजा ने क्रोधित हो करके, दीन्हा क्षण में देश निकाल।।
हस्तिनागपुर पहुँचे मंत्री, पद्‌मराय राजा के पास।
सर्व मंत्रियों ने मिलकर के, शत्रू दल का किया विनाश।।4।।

तभी मंत्रियों को मुँह मांगा, राजा ने दीन्हा वरदान।
जब चाहेंगे ले लेंगे हम, वचन लिया राजा ने मान।।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, करके पहुँचे वहाँ विहार।
संघ देख मंत्रिन् के मन में, भय का रहा न कोई पार।।5।।

अष्ट दिवस का राज्य दीजिए, मानेंगे हम सब आभार।
भीषण आग जलाए मंत्री, यज्ञ रचाए विविध प्रकार।।
दान किमिच्छित देते सबको, कीन्हा चारों ओर प्रचार।
धरणी भूषण पर्वत पर मुनि, श्रुतसागर करते थे ध्यान।।6।।

कम्पित देख गगन में तारा, मुनि को आश्चर्य हुआ महान्।
मुनियों पर उपसर्ग हुआ है, मुनि के हुआ था ये आभास।।
श्रेष्ठ विक्रिया ऋद्धि मुनि को, तप से सिद्ध हुई है खास।
यह उपसर्ग आपके द्वारा, हो सकता है पूर्ण विनाश।।7।।

हस्तिनागपुर पहुँचे मुनिवर, वात्सल्य का भाव विचार।
बटुक विप्र का भेष धारकर, मुनि पहुँचे करने उपकार।।
बलि आदि मंत्री के आगे, बटुक ने माँगा यह वरदान।
तीन पैढ़ भूमी दो हमको, तुम हो दानी श्रेष्ठ महान्।।8।।

वचन बद्ध करके मंत्री को, मुनिवर ने फिर रक्खा पैर।
दो पग में सब धरती मापी, तीजे की अब रही न खैर।।
बलि आदि मंत्री झुक जाते, मुनिवर के चरणों में आन।
हमें क्षमा कर दो हे मुनिवर!, हमसे गल्ती हुई महान्।।9।।

विष्णु कुमार मुनि की बोले, प्राणी सारे जय–जयकार।
करके यह उपसर्ग दूर गुरु, कीन्हा है हम पर उपकार।।
नशते ही उपसर्ग सभी ने, मुनियों को दीन्हा आहार।
बलि आदि भी मुनि संघ की, भाव सहित बोले जयकार।।10।।

रक्षासूत्र बाँध हाथों में, सबने कीन्हा यही विचार।
धर्म की रक्षा कर हमको भी, करना है जग का उपकार।।
साधर्मी से वात्सल्य का, भाव जगायेंगे हम लोग।
कहीं किसी भी रूप में हमको, मिले धर्म का जब संयोग।।11।।

श्रावण शुक्ला पूनम का दिन, पर्व बना यह मंगलकार।
वात्सल्य का है प्रतीक जो, सम्यक् दर्शन का आधार।।
विष्णु कुमार मुनि ने फिर से, व्रत कीन्हें थे अंगीकार।
कर्मों की सेना के ऊपर, कीन्हा मुनिवर ने अधिकार।।12।।

मुनियों ने कीन्हा तप भारी, निज परिणामों के अनुसार।
कर्म नाशकर कर स्वर्ग मोक्ष पद, पाये मुनिवर अपरम्पार।।
धर्म भावना जगे हृदय में, पाप रहें हमसे अतिदूर।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण, से हृदय भरे मेरा भरपूर।।13।।

रक्षा बन्धन पर्व धर्म की, रक्षा का त्यौहार महान्।
'विशद' भाव से करते हैं हम, मुनियों का अतिशय गुणगान।।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, सप्त शतक के चरण नमन्।
हैं उपसर्ग निवारक महामुनि, विष्णु कुमार के पद वन्दन।।14।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनिभ्या जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा– वात्सल्य का पर्व यह, रक्षाबन्धन नाम।
जिन मुनियों के चरण में, बारम्बार प्रणाम।।

।। इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्य जातास्ततृ शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्याः श्री भरतसागराचार्य श्री विरागसागराचार्याः जातास्तत् शिष्याः आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे राजस्थान प्रान्तान्तर्गत श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर चित्रकूट सांगानेर जयपुर मासोत्तम मासे शुभ मासे श्रावण मासे कृष्णपक्षे ग्यारस रविवासरे श्री रक्षाबन्धन विधान रचना समाप्त इति शुभं भूयात्।

रक्षाबन्धन विधान की आरती

तर्ज भक्ती बेकरार है...

गुरुवर का दरबार है, भक्ती अपरम्पार है।
मुनि अकम्पनाचार्य आदि की, हो रही जय जयकार है।।टेक।।

घृत का दीप जलाकर लाए, श्री मुनिवर के द्वार जी-2
भाव सहित हम गुण गाते हैं, हो जाए उद्धार जी-2
गुरुवर का..................।।1।।

श्री अकम्पनाचार्य आदि शुभ, सप्त शतक मुनिवर ज्ञानी-2
धर्म साधना करने वाले, पावन थे जो कल्याणी-2
गुरुवर का..................।।2।।

नगर हस्तिनापुर में जाके, पावन ध्यान लगाए थे-2
बलि आदिक मंत्री मुनियों से, मन में वैर बनाए थे-2
गुरुवर का..................।।3।।

जिनके ऊपर मंत्री छल से, बहु उपसर्ग कराए थे-2
विष्णु कुमार मुनी ऋद्धी से, वह उपसर्ग नशाए थे-2
गुरुवर का..................।।4।।

तब से चैत शुक्ल पूनम को, यह त्यौहार मनाते हैं-2
रक्षासूत्र बाँध के कर में, वात्सल्य दिखलाते हैं-2
गुरुवर का..................।।5।।

जैन धर्म संतों की रक्षा, में उपयोग लगाना है-2
'विशद' भाव धारण कर मन में, निज कर्तव्य निभाना हैं-2
गुरुवर का............।।6।।

समुच्चय महार्घ्य

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय ,सर्व साधु के चरण नमन्।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैनधर्म को शत् वंदन।।
सोलहकारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नंदीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष।।

दोहा– अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, 'विशद' भाव के साथ।
चढ़ा रहे त्रय योग से, झुका चरण में माथ।।

ॐ ह्रीं श्री अरंहत,सिद्ध,आचार्य,उपाध्याय,सर्व साधु,सरस्वती देव्यै,सोलहकारण भावना,दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित, कृत्रिम–अकृत्रिम, चैत्य–चैत्यालय,नंदीश्वर,पंचमेरु,चैत्य–चैत्यालय,कैलाशगिरि,चंपापुर,गिरनार,पावापुर, सम्मेद शिखर आदि,निर्वाण क्षेत्र, तीस चौबीसी,तीन कम नौ करोड गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो समुच्चय महार्घ्यं निर्वपामीति।

(पुष्प क्षेपण करते हुए शांतिपाठ बोले)

शांति पाठ

शांतिनाथ शांती के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे।।1।।
शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
शांतिपाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजलि कर शांति जगाएँ।।2।।
जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ।
जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी।।3।।
शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी।
राजा प्रजा भक्त नर–नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी।।4।।
जैनधर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ।
श्री जिन चैत्य जिनालय भाई, विशद बनें सब शांति प्रदायि।।5।।

शान्तये शांतिधारा.....3, पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(कायोत्सर्गं करोम्यहं)

विर्सजन पाठ

भूल हुई हो जो कोई, जान के या अंजान।
बोधि हीन मैं हूँ विशद,क्षमा करो भगवान।।1।।
ज्ञान ध्यान शुभ आचरण, से भी हूँ मैं हीन।
सर्व दोष का नाश हो, शुभाचरण हो लीन।।2।।
पूजा अर्चा में यहाँ, आए जो भी देव।
करूँ विर्सजन भाव से, क्षमा करो जिन देव।।3।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आशिका लेने का मंत्र

पूजा कर आराध्य की, धरे आशिका शीश।
विशद कामना पूर्ण हो, पाएँ जिन आशीष।।

******

आचार्योपाध्याय-सर्वसाधु का अर्घ्य

रत्नत्रय के धारी पावन, शिवपथ के राही अनगार।
विषयाशा के त्यागी साधू, तीन लोक में मंगलकार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करते हम जिनका अर्चन।
'विशद' भाव से चरण कमल में, भाव सहित करते वन्दन।।

ॐ ह्रीं निर्ग्रन्थाचार्य उपाध्याय सर्व साधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य श्री विशदसागरजी महामुनिराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकार लाए है।
महाव्रतों को धारण कर ले, मन में भाव बनाए है।
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ्य समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ्य हो प्राप्त हमें हम गुरु चरणों में सिर धरते है।।

ॐ हूं परम पूज्य क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। गुरु....1।।

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। गुरु....2।।

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।गुरु...3।।

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। गुरु....4।।